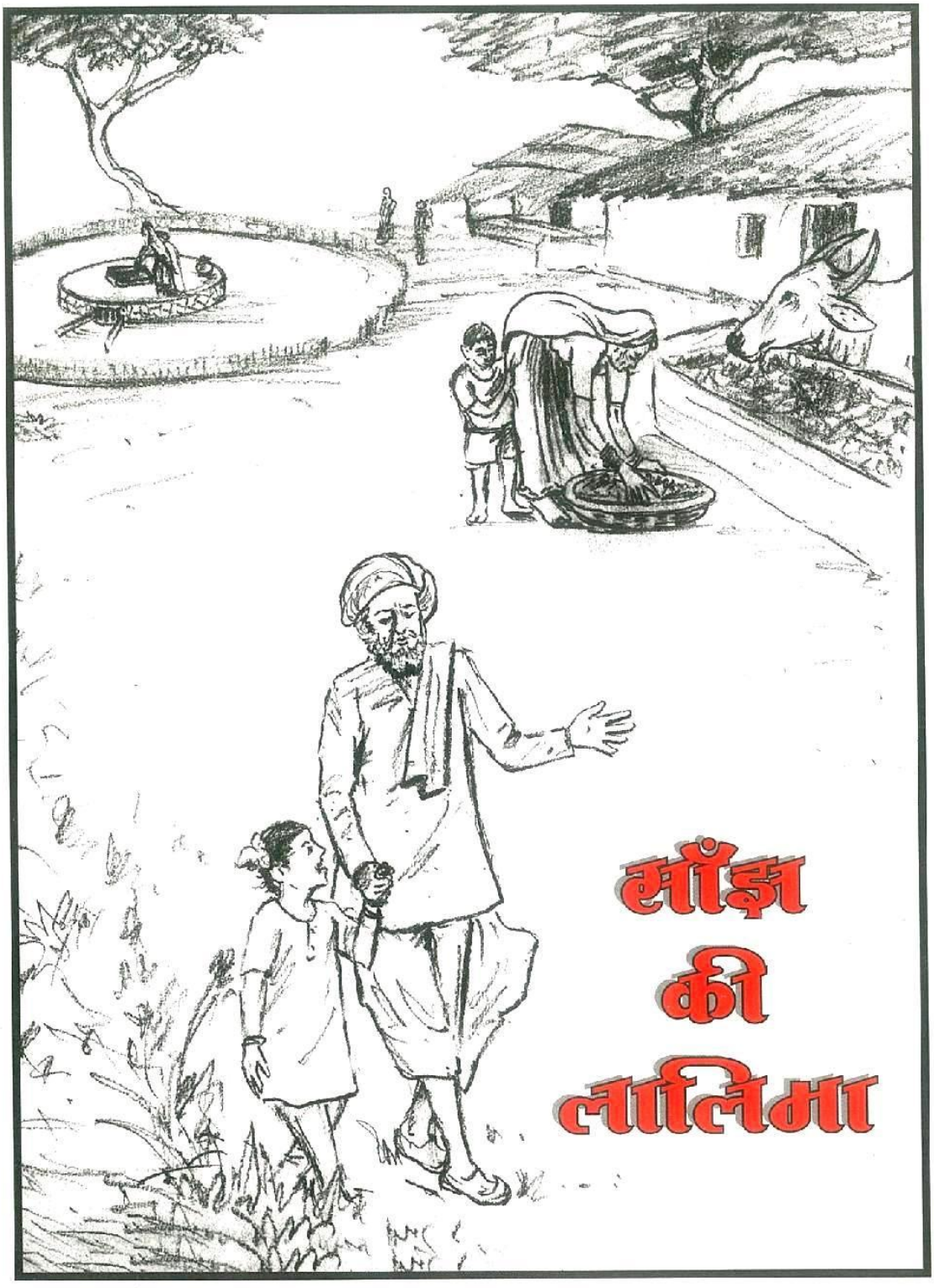

साँझ की लालिमा

साँझ की लालिमा

HelpAge International

Leading global action on ageing

ग्राविस

संस्करण : फरवरी 2006

प्रकाशक :
ग्राविस
ग्रामीण विकास विज्ञान समिति
3 / 458, मिल्कमैन कॉलोनी,
पाल रोड़, जोधपुर–342008
फोन : 91–291–2785317
फैक्स : 91–291–2785549
ई–मेल : gravis@datainfosys.net
वैबसाइट : www.gravis.org.in

तकनीकी सहयोग :
हैडकॉन
हैल्थ एन्वायरमेन्ट एण्ड डवलपमेन्ट कन्सोर्टियम
67 / 145, प्रताप नगर हाऊसिंग बोर्ड,
सांगानेर, जयपुर–303 906
फोन : 91–141–2792994
फैक्स : 91–141–2790800
ई–मेल : hedcon@datainfosys.net

वित्तीय सहयोग :
हैल्पऐज इन्टरनेशनल एवं यूरोपियन कमिशन

आवरण चित्र :
अनिल पाठक

मुद्रक :
भालोटिया प्रिन्टर्स, जयपुर • फोन : 2200111

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

प्रस्तावना 1

1. नहीं मांगती हकीमा अब पानी की भीख 5
2. उम्मीद के नये उजाले 7
3. सीखने में उम्र बाधा नहीं 9
4. धोरों में लहलहाती खुशियाँ 11
5. धोरों में बाग बगीचे 13
6. बदल गये जिन्दगी के मानी 15
7. आँखों में वापस लौटी चमक 17
8. खुशियों की सौगात : खड़ीन 19
9. खुशी के आँसू 21
10. मण्डालिया की नाड़ी 23

प्रेरणा एवं मार्गदर्शन

स्व. श्री लक्ष्मीचन्द त्यागी

सम्पादक

जे. पी. गुप्ता

दीपक मलिक

महितोष बागोरिया

सहयोग

प्रेमचंद गांधी

ईवुड रावनशार्ट

समानता चट्टाराज

रोशन लाल

महिपाल सिंह

संतोष विश्नोई

विक्रम मांझू

रामनिवास चौधरी

माधाराम

किशनाराम

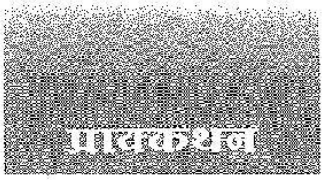

ग्राविस ने थार मरुस्थल में वृद्धजन विकास (ADOPT) की एक महत्वाकांक्षी परियोजना शुरू की थी। इस परियोजना में जिन ग्रामीण वृद्धजनों को विभिन्न प्रकार से सहयोग कर लाभ पहुँचाया गया, उनमें से कुछ की सफलता की कहानियाँ इस पुस्तिका में संग्रहीत हैं। इन कहानियों के प्रकाशन के पीछे उद्देश्य यह है कि क्षेत्रीय और राष्ट्रीय नीति निर्माताओं के सामने परियोजना की सोच–समझ और क्रियान्वयन की प्रभावान्विति प्रस्तुत की जा सके। इसी के साथ–साथ विकास क्षेत्र में संलग्न विभिन्न संस्थाओं को राजस्थान में वृद्धजन विकास के क्षेत्र में जरूरी प्रयासों के बारे में अवगत कराना भी इस प्रकाशन का ध्येय है।

इस परियोजना के अन्तर्गत पश्चिमी राजस्थान के जोधपुर एवं बाड़मेर जिलों का चयन किया गया किया था। सफल कहानियों के आलेखन हेतु दोनों जिलों से ही छह गाँवों को चुना गया था। चार साथियों का एक दल इस काम में जुटा था। अनौपचारिक साक्षात्कार के जरिये जरूरी जानकारियाँ एकत्रित की गयीं। उत्तरदाताओं का चयन आकस्मिक था, तथापि यह कार्य इस प्रकार किया गया ताकि परियोजना और सहयोग के अनेक पहलू सामने आ सकें। लाभार्थियों के साक्षात्कार, उनको किये गये सहयोग, उनके जीवन पर इसके पड़ने वाले और भावी प्रभावों को ध्यान में रखकर लिये गये थे।

हम "हेल्पेज इण्टरनेशनल" और "यूरोपियन कमीशन" के भी अत्यन्त आभारी हैं। इस पुस्तिका के लिए सभी साथियों के सहयोग के हम आभारी हैं। जिन्होंने इस अध्ययन और प्रस्तुत प्रकाशन में हमें आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। हमें विश्वास है कि पाठकों को यह पुस्तिका रुचिकर लगेगी। विकास क्षेत्र में संलग्न संस्थाओं और व्यक्तियों को भी हमें उम्मीद है पुस्तिका यह समझाने में सहायक सिद्ध होगी कि वृद्धजन सबलीकरण की दिशा में अभी बहुत प्रयास किये जाने बाकी हैं।

शशि त्यागी,
सचिव, ग्राविस

हम भारतीय परम्परा की पृष्ठभूमि देखें तो पायेंगे कि अनुभव, सहयोग, त्याग, प्रेम, वात्सल्य और करुणा जैसे गुणों के लिए वृद्धजनों का सम्मान यहाँ की सभ्यता और संस्कृति का अविभाज्य अंग रहा है। आज बदलते परिवेश में रोजगार के आयाम, खेती और पशुपालन से आमदनी और सामाजिक मूल्यों में कमी से वृद्धजन की स्थिति में भी बदलाव आया है। आज दुर्भाग्य से भारत के अधिकांश वृद्धजन बहुत उपेक्षित जीवन–स्थितियों में रहने के लिए अभिशप्त और मजबूर हैं। हम सब एक दिन बूढ़े होंगे और चाहेंगे कि बुढ़ापे में भी हम एक सम्मानपूर्वक स्वस्थ जीवन जीयें। लेकिन अगर हमने अपने वृद्धजनों को स्वस्थ और सम्मानजनक जीवन जीने में मदद नहीं की तो क्या आने वाली पीढ़ियाँ हमारा ख्याल रखेंगी?यह "यक्ष प्रश्न" आज हमारे दायित्वों के प्रति हमें आगाह करता है। आज हमारे सामने चुनौती इस बात की है कि हम अपने वृद्धजनों को विकास की मुख्यधारा में रखें और उनके स्वास्थ्य के साथ–साथ उनकी मानसिक, सामाजिक और आर्थिक जरूरतों का भी ख्याल रखें। भारत की इस समृद्ध परम्परा को भुलाने के बजाय सजीव बनाये रखना हमारी जिम्मेदारी है।

भारतीय परम्परा : बड़ों का आदर सत्कार

भारतीय परम्परा के अनेक पहलू ऐसे हैं जिनसे समाज–संस्कृतियों ने बहुत कुछ सीखा है। बड़ों के आदर–सत्कार का गुण भारतीय संस्कृति की संयुक्त परिवार प्रथा की नायाब उपलब्धि है। परिवार के सदस्यों के बीच आपसी रिश्तों की मजबूती और पारस्परिक समर्पण को शक्ति प्रदान करने वाली संयुक्त परिवार प्रथा वृद्धजनों को समाज में उनका वाजिब स्थान रखती है।

भारत में माता–पिता को भगवान का रूप माना जाता है। श्रवण कुमार जैसे बेटे इसी देश में हुए हैं जो अशक्त–बूढ़े–अंधे, माता–पिता को कावड़ में बिठाकर तीर्थाटन के लिए ले जाते हैं। राम जैसे व्यक्तित्व की रचना आदिकवि वाल्मीकि के कालजयी काव्य में हुई, जिसमें पुरुषोत्तम राम ने यह घोषणा की, कि मैं अपने पिताराज की इच्छा से तीक्ष्ण विष खा सकता हूँ अथवा अग्नि में स्वयं जल सकता हूँ। वृद्ध सम्मान की परम्परा ने भीष्म पितामाह जैसे व्रती दिये जिन्होंने आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा कर पिता के वैवाहिक निर्णय को सम्मान दिया। इसी तरह महाराज ययति के पुत्र ने अपना यौवन पिता को स्थानानांतरित कर दिया। माता–पिता की सेवा–सुश्रूषा पुत्र–धर्म माना गया है।

पितृ सत्तात्मक भारतीय समाज में विवाह के बाद पुत्र माता–पिता के साथ रहता है। यह परम्परा बूढ़े माता–पिता को बेटा–बहू और पोते–पोतियों के बीच सहज शांतिपूर्ण जीवन जीने का आदर्श प्रस्तुत करती है। इतने सारे परिजन मिलकर एक वृद्ध दम्पति का बुढ़ापे में सहारा बनते हैं। इसके अलावा जाति और गोत्र की सामाजिक व्यवस्था नौजवानों को वृद्धजनों के सम्मान और सेवा–टहल के लिए भी विवश करती है। आज इसे दुर्भाग्य ही कहेंगे कि यह परम्परा एकल परिवार प्रथा के कारण नष्ट होती जा रही है। आर्थिक कारणों से ज्यादातर संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं। आमतौर पर युवा नौकरी–धन्धे के कारण अपना पुश्तैनी घर–गाँव के साथ माँ–बाप भी छोड़ जाते हैं। उनके लिये बूढ़े माँ–बाप सिवा सरदर्दी के कुछ नहीं होते। सन्तान रुपी पूंजी के वर्धन में जीवन खपा देने वाले माता–पिता उस पूंजी के ब्याज के रुप में जीवन की संध्या में उपेक्षित जीवन जियें तो यह स्थिति चिन्तनीय अवश्य है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो वृद्धजनों की हालत और भी खराब होती है, क्योंकि अधिकांशतः ग्रामीण, कृषि एवं पशुपालन पर ही निर्भर रहते हैं और उम्र के इस पड़ाव पर वे इनमें सहयोगी नहीं हो पाते, जिसके कारण उन्हें बिल्कुल नकार दिया जाता है।

ग्रामीण थार में गरीब वृद्धजनों की समस्याएँ

थार मरुस्थल, भारत के उत्तर–पश्चिमी में मारवाड़ क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। यहाँ बारिश बहुत कम और कभी–कभार होती है। यहाँ मीलों फैला रेत का समंदर राज करता है और तेज लू और आंधियाँ रेत के धोरों का सौंदर्य संवारती–सजाती रहती हैं। एक तो पानी यहाँ वैसे ही दुर्लभ है और दूसरी तरफ लगातार अकाल यहाँ जीना दूभर बनाए हुए है। तेज धूप और गर्मी बहुत पड़ती है। यहाँ हरियाली बहुत कम है, कांटेदार वनस्पति ही यहाँ फलती–फूलती हैं। फिर भी खेती और पशुपालन ही यहाँ की 90 फीसदी आबादी का मुख्य जीविका स्रोत है। ऐसी विकट जीवन परिस्थितियों में आज के परिपेक्ष्य में गरीब और बूढ़ा होना अभिशाप की तरह है। ग्रामीण थार के वृद्धजनों की मुख्य समस्याएं सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक स्थिति या परिवार और रहने की व्यवस्थायें मासिक और शारीकि स्वास्थ्य तथा सामाजिक स्तर है।

सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक स्थितियाँ

राजस्थान में खेती और पशुपालन ही मुख्य आजीविका का साधन है, इसलिए इन साधन से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति प्रायः असंगठित क्षेत्र में ही आता है। देश में सामाजिक सुरक्षा योजनाएं मुख्यतः संगठित क्षेत्र से सेवानिवृत होने वाले वृद्धजनों के लिए ही हैं। असंगठित क्षेत्र के वृद्धजनों के लिए एक मात्र सुरक्षा योजना "राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन" है, जिसमें 65 वर्ष से ऊपर के वृद्धों को मात्र रू. 200/– प्रतिमाह पेंशन मिलती है। यह पेंशन भी निर्धन वृद्धजनों में से बहुत कम लोगों को ही मिल पाती है। गरीब वृद्धजनों के लिए सामाजिक सुरक्षा सिर्फ उनकी जमीन और पशुधन हैं। आज के हालातों में ये भी अनुपयोगी सिद्ध हो रहे हैं, क्योंकि लगातार पड़ने वाले अकाल ने खेती और पशुपालन दोनों को मुश्किल बना दिया है। भोजन–पानी की अपर्याप्त उपलब्धता के बीच वृद्धजन बहुत खराब हालात में रह रहे हैं। उम्र के कारण जहाँ एक तरफ शारीरिक शक्ति क्षीण होती जा रही है वहीं काम करने की सामर्थ्य भी घटती जा रही है। वे मुख्यतः अपनी रोजाना की छोटी–मोटी कमाई पर ही आश्रित हैं।

परिवार और रहने की व्यवस्थाएँ

भारतीय परम्परा में वृद्धजनों को किसी भी प्रकार के सामाजिक, आर्थिक और मानसिक संकट के समय परिवार से ही सहारा मिलता रहा है। लेकिन संयुक्त परिवार प्रथा के तीव्र विघटन से वह सहारा भी समाप्त होता जा रहा है। पश्चिमी राजस्थान में बरसों से पड़ते आ रहे अकाल और सूखे ने लोगों की जीविका और जीवन दोनों ही को संकट में डाल दिया है। लोग अपने परिवारों को साथ लेकर रोजगार की तलाश में गाँवों से शहर–कस्बों की ओर पलायन कर रहे हैं, लेकिन बूढ़े माँ–बाप को अनावश्यक बोझ समझकर गाँव में ही छोड़ जाते हैं। परिणाम यह है कि असंख्य वृद्धजन गाँवों में नितांत अकेले जीवन यापन कर रहे हैं।

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य

वृद्धजनों का मानसिक स्वास्थ्य और शरीर, उम्र के साथ होने वाले परिवर्तनों से ही नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक कारणों से भी प्रभावित होता है। परिवार पर बोझ और परिवार के लिए नितांत अनुपयोगी होने के अहसास ने उनके मानसिक स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित किया है। थार में निरन्तर अकाल के कारण पानी और भोजन दुर्लभ होता जा रहा है। नौजवान दूसरी जगह जाकर रोजी–रोटी के लिये मेहनत कर सकते हैं लेकिन अशक्त वृद्धजनों का स्वास्थ्य कड़ी मेहनत की इजाजत नहीं देता। शायद इसीलिये भी वे खराब आर्थिक और अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों में जी रहे हैं।

सामाजिक स्तर

गाँव की सामाजिक व्यवस्था के संचालन का जो दायित्व सिर्फ वृद्धजन ही निभाते थे, वह व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो गई है। युवा पीढ़ी में घिर आई निराशा ने बड़ों के प्रति सम्मान और आदर के भाव भी समाप्त कर दिये हैं। दूर–दूर फैली आबादी और छोटे–छोटे गाँव–ढ़ाणियों के कारण वृद्धजन अपने हम उम्र लोगों से भी नियमित सम्पर्क–सम्वाद नहीं कर पाते। आदर, सत्कार और सामर्थ्य का जो भाव पुराने जमाने की ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था में था और वृद्धजनों को जो शक्तियाँ हासिल थी, वे आज धराशायी हो रही हैं।

'अडोप्ट परियोजना'

'थार मरुस्थल में वृद्धजन सामाथिक विकास परियोजना (अडोप्ट)' वृद्धजनों को विकास की मुख्य–धारा में लाने के लिए ग्राविस का नवाचार है। परियोजना का मुख्य उद्देश्य सामाजिक–आर्थिक पहल के जरिये निर्धन वृद्धजनों, विशेषकर वृद्ध महिलाओं को लाभान्वित करना है। यह एक ऐसी पहल है, जिसमें न केवल उनका सबलीकरण हो रहा है बल्कि वे परिवार और समाज से भी जुड़ रहे हैं। इसी को ध्यान में रखकर ग्रामीण वृद्धजन संगठनों (VOPA), का गठन किया गया, जिसके मार्फत परियोजना का क्रियान्वयन, प्रशिक्षण, स्वास्थ्य–रक्षा, बैठक, सहयोग आदि कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को लाभ पहुँचाने के प्रयास किये गये हैं। ग्राविस अपनी सभी परियोजनाओं में लोगों भागीदारी की भावना से काम करने वाली संस्था है।

ग्रामीण वृद्धजन संगठन (VOPA) का गठन

प्रत्येक लक्षित गाँव में ग्रामीण वृद्धजनों के एक अनौपचारिक संगठन के रुप में ग्रामीण वृद्धजन संगठन का गठन किया गया है। इन संगठनों के माध्यम से ग्रामीण वृद्धजन अपने विचार, सुख–दुःख, अनुभव और ज्ञान को एक–दूसरे के साथ साझा करते हैं। इन संगठनों के माध्यम से यह तय किया जाता है कि वृद्धजनों को किस प्रकार के सहयोग और सहायता की जरूरत है और कितने लोगों को वास्तव में किस प्रकार की मदद की जरूरत है। इसी प्रकार किसी भी तरह के क्रियान्वयन में भी यह संगठन ही जिम्मेदारी निभाता है। एक प्रकार से ग्रामीण वृद्धजन संगठन गाँव के वृद्धों को प्राथमिक तौर पर सबल बनाने वाला शक्तिशाली संगठन है। इस निमित इस संगठन के पास पूर्ण निर्णात्मक शक्तियाँ भी होती हैं।

क्षमता निर्माण

परियोजना का मूल उद्देश्य लाभार्थियों की क्षमता निर्माण है। इस उद्देश्य को केन्द्रित रखते हुए समय–समय पर प्रशिक्षण भी दिया जाता है, उदाहरण के लिए पशु चिकित्सा, पशुपालन प्रबंधन, स्वास्थ्य रक्षा, वर्षाजल संचयन आदि।

जल विकास एवं प्रबन्धन

खडीन निर्माण :

खडीन एक अर्द्ध चक्राकार, जमीनी बांध या पुश्ता है जो किसी खेत में ढलवां सिरे के विपरीत छोर पर बनाया जाता है। एक सिरा बरसाती पानी आने के लिए पूरा खुला रहता है। यह राजस्थान में कृषि की परम्परागत तकनीक है। जिससे बरसात का पानी व्यर्थ बहकर नहीं जाता और खेत में ही रुक जाता है। बरसात का पानी चूंकि खडीन क्षेत्र पर इकट्ठा हो जाता है, इसलिये फसल को पर्याप्त नमी प्रदान करता रहता है।

टांका निर्माण :

वर्षाजल संग्रहण के लिए टांका बनाना राजस्थान की एक और प्राचीन तकनीक है। टांका एक भूमिगत कुण्ड है जिसमें चारों ओर आगोर अथवा पक्के घर की छत का पानी एकत्र होता रहता है। टांके में संग्रहित जल लम्बे समय तक परिवार में पेयजल की आपूर्ति करता है। यह एक आसान तकनीक है जो राजस्थान के गाँवों की सदियों से प्यास बुझाती आयी है।

नाड़ी की खुदाई :

गाँव भर के लिए वर्षा जल संग्रहण की तकनीक का सामुदायिक स्वरुप है नाड़ी। टांका और खडीन प्रायः व्यक्तिगत होते हैं, जबकि नाड़ी सामुदायिक होती है। कठोर ढलवाँ मिट्टी में नाड़ी का निर्माण किया जाता है। नाड़ी का जल न सिर्फ मनुष्यों बल्कि पशुओं के भी पेयजल की आपूर्ति करता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि नाड़ी के जल ग्रहण क्षेत्र में जमा पानी आसपास के कुओं का जल स्तर बढ़ा देता है। बहुत–सी नाड़ियाँ देखभाल के अभाव में रेत से भर जाती हैं। इससे इनकी जल संग्रहण क्षमता भी कम हो जाती है। पानी की उपलब्धता बढ़ाने के लिए समय–समय पर नाड़ियों की सफाई जरूरी होती है। नाडी की जल संग्रहण क्षमता बढ़ाने के साथ–साथ मिट्टी हटाने से पानी की शुद्धता और स्वच्छता भी स्वतः ही बढ़ जाती है।

खाद्य सुरक्षा

फलोद्यान

कुछ पेड़–पौधों की एक छोटी बगिया लोगों के लिये शायद विशेष महत्व न रखती हो, लेकिन मरुस्थल के वासियों के लिये यह वरदान हो सकती है। रेत के समन्दर में फलों का बाग थार वासियों के लिए एक स्वप्न सरीखा है। परियोजना में यह सोचा गया कि लाभान्वित होने वाले वृद्धजनों का एक फलोद्यान बने तथा क्षेत्र की जलवायु के अनुरुप और जरूरतों के अनुसार 20 पौधों का वितरण किया जाए।

गाय वितरण

संतुलित आहार लोगों के जीवन में व्यापक बदलाव ला सकता है। इसलिये, आहार सुरक्षा के विषय ने योजनाकारों और क्रियान्वयन से जुड़े लोगों का ध्यान आकर्षित किया। परियोजना में वृद्धजनों को संतुलित आहार उपलब्ध कराने में सहयोग करने का विचार किया गया। इसके लिये लाभार्थियों के आर्थिक और स्वास्थ्य स्तर को बेहतर बनाने के उद्देश्य से गाँव के गरीब वृद्धजन/परिवारों को दुधारू गायों का वितरण किया गया।

यह परियोजना लक्षित समुदाय के लिए वरदान सिद्ध हो रही है। वृद्धजनों का, परिवार और समाज में महत्व और रुतबा बढ़ा है। उनका आहार स्तर और साथ ही साथ स्वास्थ्य भी बेहतर हुआ है। इस प्रकार वे अब परिवार और समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

वृद्धजनों के जीवन में आये बदलाव और परियोजना के प्रभाव को यहाँ वृतचित्रों के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया है। वृद्धजन अब अपने परिवार और समाज के लिए बोझ या सिरदर्द नहीं रहे हैं। उन्होंने अपनी क्षमता सिद्ध कर दी है और उन्हें आज ग्रामीण विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण घटक के रूप में देखा जा रहा है। आइये जरा एक नजर डालें इन खुशनुमा वृद्धजनों की जिन्दगी की बदलती स्थितियों पर।

नहीं मांगती हकीमा अब पानी की भीख

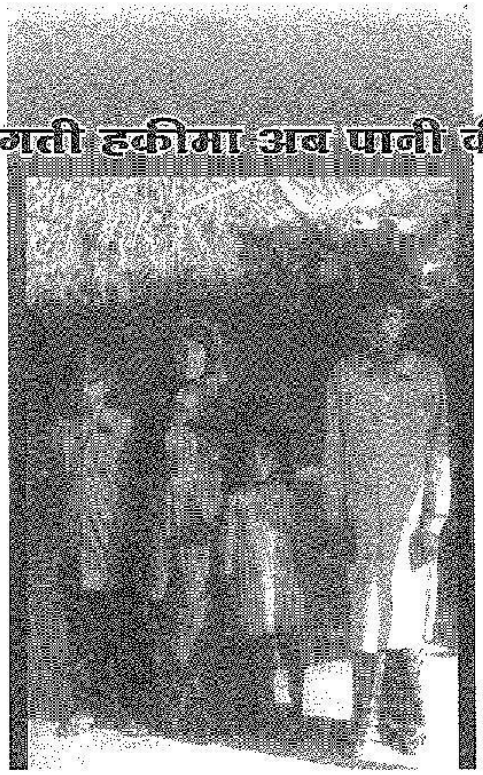

हकीमा मोइन खान

उम्र : 60 साल | परिवार : 5 सदस्य

गाँव : लक्ष्मीपुरा, खण्ड–शिव, जिला–बाड़मेर | सहयोग : टांका निर्माण

साठ बरस की बेवा हकीमा के शौहर की क्षय रोग (टी.बी.) से कुछ वर्ष पूर्व मृत्यु हो गई थी। आज अकेली हकीमा पर ही चार बच्चों के भरण–पोषण की जिम्मेदारी है। पाँच लोगों के परिवार में कोई भी तो ठीक से नहीं कमा सकता। बड़ा बेटा मानसिक विक्षिप्तता से ग्रस्त होने के कारण गाँव और आसपास घूमता–फिरता रहता है। अपनी बूढ़ी जर्जर काया से हकीमा इतनी कमजोर है कि वह किसी किस्म की मजदूरी या काम–धन्धा नहीं कर सकती जिससे वह अपने परिवार की भूख–प्यास मिटा सके। गरीबी के इन हालातों के चलते हकीमा और उसके बच्चे गाँव वालों के दिये हुए दान से ही अपनी जिन्दगी की गाड़ी खींच रहे थे।

रेगिस्थान क्षेत्र के बारे में यह कहावत शायद हर आदमी ने सुनी होगी कि **"घी ढूळे म्हारो कुछ नहीं जाए, पानी ढूळे म्हारो जी बळ जाए"** हकीमा ने भी यही कहावत हमारे सामने दोहराई। उसने बताया कि थार के गाँवों में खाने को कुछ जरुर मिल जाता है लेकिन पीने का साफ पानी दुर्लभ है। हकीमा अपनी लाचार आँखों में ग्रामीणों के प्रति कृतज्ञता दिखाती हुई

कहती है, 'मुझे खाने के लिये यहाँ लोग रोटी–साग दे देते हैं, लेकिन पानी की कोई नहीं पूछता क्योंकि गाँव में पानी है ही बहुत कम और इस बुढ़ापे में कहाँ से पानी लाएं।

परियोजना के बारे में बताती हुई हकीमा कहती है कि पहली बार ऐसी योजना सुनी जो वृद्ध लोगों के लिये काम करेगी। मन में आया ये भी कोई वैसी ही सरकारी योजना होगी जो कागजों में चलेगी और वैसे भी गरीबों को कौन पूछता है?फिर भी जब पता लगा कि गाँव के बुढ़े लोगों ने ही कोई कमेटी बनाई है और उसकी हर महीने मीटिंग होती है। मैं भी उस मीटिंग में जाने लगी। लोग मीटिंग में आपस में बैठकर बातचीत करते और एक–दूसरे की समस्या जानते तो मुझे लगा कि सही में अब बुढ़ों के हित में जरुर काम होंगे। मेरी परेशानी गाँववालों से छिपी हुई नहीं थी। ऐसी ही एक मीटिंग में जब पता लगा कि टांके बनाये जायेंगे तो सबसे पहले मेरा नाम गाँववालों ने प्रस्तावित किया। यह मेरे लिये एक सपना था कि मेरे आहाते में भी कोई टांका हो, आज मेरा सपना सच हो चुका है।

अपने टांके को गर्व से दिखाती हुई हकीमा कहती है कि मेरा टांका बहुत मजबूत बना है। इसमें आठ कट्टे तो सीमेन्ट के लगे हैं, एक बूंद पानी भी कहीं से नहीं रिसता है और एक बार जब यह टांका भर जाता है तो 6–7 महीने तक मुझे पानी की जरुरत नहीं होती। आसमान की ओर निगाहें डालती हुई हकीमा खुदा को धन्यवाद देती हुई कहती है कि पिछले 2 साल फिर अकाल के रहे। कई नाडियाँ सूखी रही फिर भी मेरा टांका पानी से लबालब इसलिए भर गया कि मुझे संस्था की ट्रेनिंग में यह समझाया गया कि बारिश आने से पहले आगौर की सही साफ–सफाई कर ली जाए एवं उसका ढलान सही हो तो बहुत कम बारिश में भी पीने के पानी की दिक्कत नहीं रहती। टांके की खूबियाँ लगातार गिनाते हुए हकीमा कहती है कि इसके ऊपर ढक्कन लगाया है। मैंने अपने टाँके के आसपास कंटीली झाड़ियाँ रोपकर ऐसी व्यवस्था कर ली है कि जानवर आगोर को खराब नहीं कर सकते। यह टांका न सिर्फ हमारी बल्कि मेरी भेड़–बकरियों की प्यास बुझाता है, नहीं तो पहले 2 किलोमीटर दूर से सिर पर पानी रखकर लाना पड़ता था। नहाना तो दूर की बात है पीने की जरुरत पूरी हो जाए वह भी बहुत थी।

अब हकीमा के टाँके में इतना पानी है कि वह और उसका परिवार आराम से बेहतर गुणवत्ता का पानी पी सकते हैं। अब तो गाँव वाले भी हकीमा के घर पानी लेने के लिये आते हैं। कल तक जहाँ हकीमा पूरी तरह गाँव वालों पर निर्भर थी वहीं आज वह उनकी मददगार बन गई है।

टीमा कुम्हार

उम्र : 70 साल | परिवार : बेटा, बहू और खुद

गाँव : गण्डालिया, खण्ड–शिव, जिला–बाड़मेर | सहयोग : फलोद्यान और टांका निर्माण

टांके ने न सिर्फ हम लोगों की प्यास बुझाई है बल्कि मेरे जानवरो को भी अकाल में जिन्दा रखा है। 'पिछले बरस पानी की कमी के चलते मैं अपने जिनावरों की प्यास नहीं बुझा पायी। चारे–पानी की कमी से मेरी चार बकरियाँ मर गयीं। इस बूढ़ी काया को लेकर अपनी बहू के साथ ढोरों के लिये पानी लाना या उनके साथ पानी के लिये भटकना बहुत मुश्किल था मेरे लिए। अपने जिनावरों के चारे का खयाल रखना भी मुश्किल हो गया था।

'पीने के पानी की कमी दिन–ब–दिन पूरे गाँव में बढ़ती जा रही थी। अपनी जर्जर काया और पकी उमर के बावजूद मैं पानी लाने के लिये जाती थी। कई दफा तो पानी खरीदना पड़ता था, लेकिन पानी सम्हालकर रखने की कोई व्यवस्था नहीं होने के कारण ज्यादातर पानी बेकार चला जाता था।' तीमा ने अपनी दारुण जल कथा इस तरह बयान की।

सत्तर बरस की तीमा विधवा है और अपने बेटे–बहू के साथ रहती है। उसका बेटा मजदूरी करने के लिए शिव (बाड़मेर) जाता है। बेटे की नई–नई शादी हुई थी, इसलिये सामाजिक बंधन

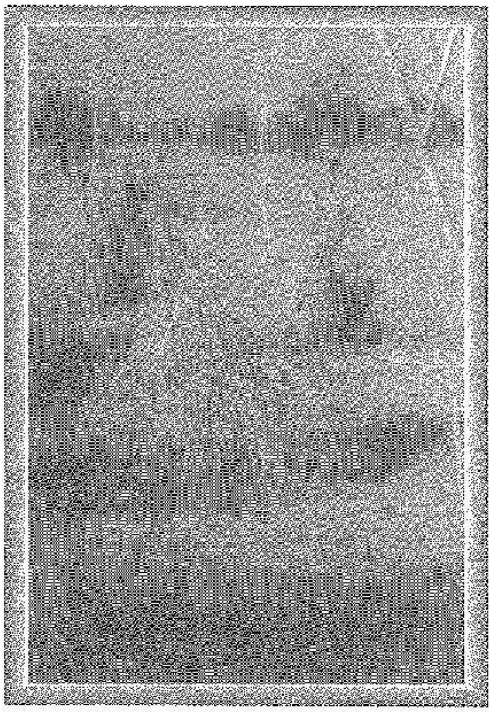

और मान्यताओं के कारण तीमा ने बहू को बेटे के साथ काम पर नहीं भेजा। बेटे की मजदूरी बहुत कम है और वह ठीक से तीन प्राणियों का खर्च भी नहीं उठा सकता। सास और बहू दोनों की जिंदगी पानी के कारण बड़ी मुश्किलों से कट रही थी।

आठ महीने पहले तीमा के लिए सीमेन्ट–कंक्रीट का एक टांका बनाया गया था। उसने जानवरों को पानी पिलाने के लिए अलग से एक जगह बनाई, ताकि जानवर टाँके के आसपास गंदगी न फैला सकें। बरसात से पहले ग्राविस कार्यकर्ताओं के सुझाव पर बेटे ने टाँके को पूरी तरह साफ कर दिया था। पहली बारिश में ही टाँके में भरपूर स्वच्छ पानी आ गया था।

बीते हुए मुश्किल दिनों को यादकर तीना कहती है, 'जब पानी की कमी थी तो रोजाना नहाना एक सपना जैसा था। अब मैं रोज नहाती हूँ और तरोताजा और बेहतर महसूस करती हूँ।' उसी वक्त तीमा की बहू बकरियों को पानी पिला रही थी। हमें उसकी तरफ ध्यान से देखने पर तीमा ने कहा, 'हम अपने टॉके से अपने ढोरों को भी पानी पिलाते हैं। अब मेरे लिये यह संभव नहीं कि जानवरों के लिये पानी लेने दूर–दूर तक जाऊँ।' तीमा की बहू की टांगों की झनझनाहट भरी पीड़ा भी अब भरपूर स्वच्छ पानी की उपलब्धता के चलते दूर हो गयी है।

तीमा को सहयोग करने के लिए टांका बनाने के साथ–साथ फलों का बाग भी लगाया गया था। उसके बाग में 5 बेर, 4 अनार, 5 गूंदा और 2 नींबू के पौधे लगाये गये थे। बाग की सुरक्षा के लिये उसके चारों ओर कंटीली बाड़ लगाई गई थी। बाग को तेज गर्म और ठण्डी हवाओं से बचाने के लिए स्थानीय सामग्री से छाया–चादरें (विण्डस्क्रीन) बनायी गयी थी। इन सब बचावों और उपायों का परिणाम यह है कि आज तीमा कहती है, 'अब मैं पानी लेने के लिये जाने में लगने वाला बखत इस बाग की देखभाल में लगाती हूँ। मुझे पक्का विश्वास है कि मेरी देखभाल इन पौधों को जल्द ही फलों से लाद देगी और मेरे परिवार की हालत और बेहतर होगी।' तीमा के पास टांका और फलों का बाग उसकी दो चमकती हुई आँखों की तरह उम्मीद का नया उजाला है।

सीखने में उम्र बाधा नहीं

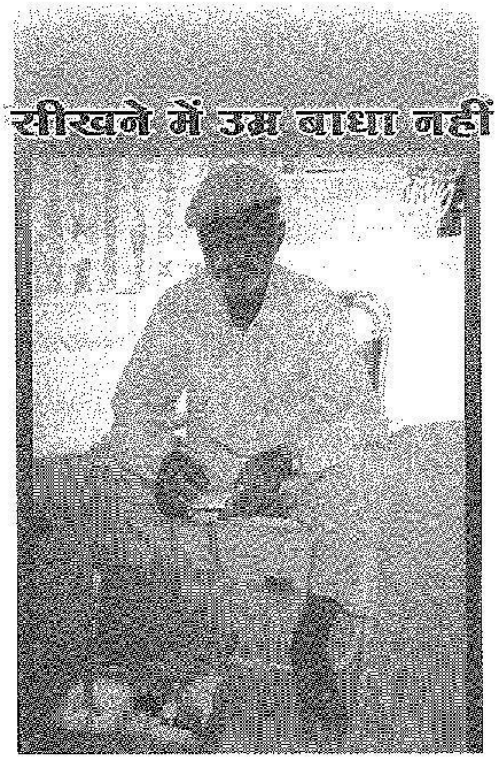

वीर चल सिंह

उम्र : 60 साल — जाति : राजपूत

गाँव : सिंहड़ा, खण्ड–फलौदी, जिला–जोधपुर — सहयोग : पशु चिकित्सा प्रशिक्षण

यह वही वीर सिंह है, जो अपना पूरा दिन फालतू किस्म की बैठकों, गप्प–गोष्ठियों, ताश की बाजियों और मटरगश्तियों में गुजारते थे। इससे परिवार में उसकी न सिर्फ इज्जत कम हो रही थी बल्कि कई बार उपेक्षित भी होना पड़ता था। कलह का कारण घर में पैसे की तंगी और उम्र के साथ–साथ परिवार की जिम्मेदारियों को बढ़ना भी था। स्वयं वीर सिंह कहते हैं कि मुझे समझ में नहीं आता था कि मैं क्या करुँ? उम्र के उस मुकाम पर पहुँच चुका था जहाँ शारीरिक मेहनत या मजदूरी करना मेरे लिये मुनासिब नहीं था। गप्प–गोष्ठियाँ करना आन्तरिक तौर पर मुझे भी बुरा लगता था पर समय निकालने के लिये यह सब करना ही पड़ता था। लगातार पड़ते सूखे और अकाल से घर की माली हालत खस्ता होती जा रही थी। वीर चल सिंह के पास खुद की उपयोगिता सिद्ध करने का कोई विकल्प नहीं था।

'उम्र सीखने की मोहताज नहीं होती' यह कहावत सिंहड़ा के 60 वर्षीय वीर चल सिंह ने चरितार्थ कर दिखाई। वीर सिंह ने बताया कि गाँव में गठित वोपा (VOPA) में जब प्रशिक्षण की बात आई तो लोगों ने सोचा कि हम वृद्ध उम्र के उस मुकाम पर पहुँच गये हैं जहाँ

लोगों को ज्ञान देते हैं तो कोई हमें क्या ज्ञान देगा और इस उम्र में भी क्या कभी कुछ नया सीखा जा सकता है?मुझे पशुओं के प्रति शुरुआत से काफी स्नेह रहा है और जब पता लगा कि प्रशिक्षण में पशुओं के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी देंगे तो मुझे लगा, मुझे इस अवसर को नहीं खोना चाहिए और इस प्रशिक्षण में भाग लेना चाहिए। प्रशिक्षण के दौरान मैंने यह महसूस किया कि मुझे वे जानकारियाँ हासिल हुई हैं जिसके कारण हमारे गाँव के जानवर असमय अकाल मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। यदि प्राथमिक स्तर पर ही समस्या से निपटा जाये तो गम्भीर समस्या का सामना नहीं करना पड़ता।

स्थानीय स्तर पर पशुओं के इलाज का ज्ञान लेकर वीर सिंह ने गाँव में पशुओं का इलाज शुरु कर दिया। वीर सिंह स्वयं कहते हैं, 'शुरुआत में मैं गाँव के हर घर के जानवरों को देखने जाता था कि कहीं किसी को कोई तकलीफ तो नहीं है।' एक ही महीने में पन्द्रह–बीस जानवर वीर सिंह के इलाज से लाभान्वित होने लगे थे। गाँववालों का कहना है कि अब वीर सिंह जहाँ भी बैठता है जानवरों की तकलीफों और बीमारियों के लक्षणों के बारे में हमको उपयोगी जानकारियाँ देता है।

गाँव की स्थिति के बारे में जानकारी देते हुये कमला देवी कहती है कि ''इस इलाके के अधिकांश युवा मजदूरी के सिलसिले में शहरों की ओर पलायन कर चुके हैं। पहले हमें जानवरों को इलाज के लिए 16 किलोमीटर दूर फलौदी ले जाना पड़ता था। औरतों और बूढ़ों के लिये इतनी दूर जानवरों को पैदल ले जाना बहुत मुश्किल काम था क्योंकि यातायात का कोई साधन भी गाँव में नहीं है। ज्यादातर मामलों में मूक पशुओं को जान से हाथ धोना पड़ता था। वीर सिंह की पशु चिकित्सा ने हम गाँव वालों को बहुत बड़ी राहत दी है। अब न तो गाँव वालों को पैदल फलौदी जाना पड़ता है और न ही ढेर सारे रुपये खर्चने पड़ते हैं। वीर सिंह गाँव के पशुओं का बहुत ही मामूली खर्च पर इलाज कर देते हैं। अगर उन्हें लगता है कि किसी जानवर की बीमारी गम्भीर है और उनकी समझ में नहीं आती तो वह ऐसी स्थिति में पशु चिकित्सक डॉ. पूनिया को रैफर कर देता है। डॉ. पूनिया वही डॉक्टर हैं जिन्होंने वीर सिंह को प्रशिक्षण दिया था।

आज वीर सिंह ने पशु इलाज के मामले में न सिर्फ स्वयं के गाँव में अपनी पहचान बनाई है अपितु आस–पास के गाँव वाले भी उसे चिकित्सक मानने लगे हैं। चिकित्सक की उपाधि प्राप्त वीर सिंह की ख्याति और सम्मान आज गाँवों में बढ़ा है। आज, किसी भी महत्वपूर्ण मसले में, फिर वह चाहे गाँव का हो या परिवार का, वीर सिंह की राय और सलाह को महत्वपूर्ण माना जाता है।

हालांकि वीर सिंह अपनी पशु चिकित्सा के काम में सफल है लेकिन उन्हें लगता है कि अभी भी बहुत सी बीमारियाँ हैं जिनके बारे में उन्हें और प्रशिक्षण की जरूरत है।

धोरों में लहलहाती खुशियाँ

अलशेर खान

उम्र : 68 साल | परिवार : 20 सदस्य

गाँव : बैगटी कलाँ, खण्ड–फलौदी, जिला–जोधपुर | सहयोग : खडीन निर्माण

इस बरस फिर बादलों के रथ पर सवार इन्दर राजा बिना कृपा दृष्टि डाले ही गुजर गये। अर्थात हर तरफ सूखा ही सूखा, अकाल ही अकाल है। यह वर्ष भी पश्चिमी राजस्थान के बाशिंदों के लिये अकाल वर्ष घोषित हो गया। अकाल वर्ष घोषित होना आसान है लेकिन उस पूरे वर्ष को निकालना किसी बनवास से कम नहीं होता। यह बात अलशेर खान ने द्रवित होकर कही।

अलशेर खाँ के बेटे बताते हैं कि "पहले तो यहाँ बारिश होती ही कम है। जो थोड़ी बहुत बारिश होती है, वह भी खेत का ढलान ज्यादा होने के कारण बरसाती पानी बहकर आगे चला जाता था। खेत का ढलान न सिर्फ बरसाती पानी को बहा ले जाता था बल्कि ऊपर की उपजाऊ मिट्टी, खाद, बीज आदि को भी बहा ले जाता। जिसके कारण और भी दिक्कतें आती थी।" बेटे की बात को आगे बढ़ाते हुए अलशेर खाँ कहते हैं कि कहने को मेरा बड़ा परिवार है पर परिवार की आवश्यकताऐं पूरी न होने के कारण परिवार में बिखराव आना शुरु हो गया था। 'किसे दोष दें। मुश्किल वक्त में मेरे तीन बेटे भी अपने परिवार को लेकर मुझसे अलग हो गये। मेरी बीवी और एक बेटा ही मेरे साथ रहे। अल्लाह की मेहरबानी है कि आज मैं बहुत खुश हूँ कि मेरा परिवार फिर से एक हो रहा है। इस जुड़ाव का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि इस अकाल वर्ष (100 मिमी. जैसी कम बारिश) में भी हमारे खेत में 8 क्विंटल ग्वार, 2 क्विंटल मूंग, डेढ क्विंटल मोठ और 50–60 किलो तिल की फसल हो पाई है। 5 क्विंटल ग्वार बेचने से मुझे रूपये 9000/– मिले। न

सिर्फ खरीफ की फसल बल्कि ढलान के पास जहाँ पानी इकट्ठा हो गया था वहाँ 5 बीघा में सोयामुखी की बुवाई की है। यह सारा चमत्कार मेरे खेत में खडीन बनाये जाने के बाद ही हुआ है।

ग्राविस के सहयोग से अलशेर के खेत में 1100 फीट लम्बी खडीन बान्ध बनाई गई थी। खडीन की देखभाल के लिए ग्राविस कार्यकर्ताओं की सलाह पर अलशेर खाँ ने खडीन के जलग्रहण क्षेत्र में बहुत से पेड–पौधे लगाये ताकि मिट्टी का कटाव कम से कम हो। अतिरिक्त पानी के निकास के लिये खेत में 'नेहटा' भी बनाया गया।

अपने खेत में चहलकदमी करते हुए अलशेर कहते है, "आप जानते हैं कि एक अच्छी बारिश निचले क्षेत्र में 4–5 फीट गहरा पानी जमा कर देती है, जिससे मैं अपने खेत को पहली बरसात में ही हरा भरा कर सकता हूँ।"

आज जब अलशेर की आर्थिक स्थितियां सुधरती रही हैं, और खाद्य समस्या समाप्त हो रही है तो उसके तीनों बेटे भी परिवार सहित वापस आ गये हैं। उन्हें अपनी गलती का अहसास हो रहा है और घर छोड़ने के अपने निर्णय पर गहरा पछतावा भी है। बड़ा बेटा कहता है, 'अब हम हमारे अब्बा को छोड़कर कभी नहीं जायेंगे।'

धोरों में बाग बगीचे

सुमेर खान

उम्र : 70 साल | परिवार : 3 सदस्य

गाँव : बैंगटी कलाँ, खण्ड–फलौदी, जिला–जोधपुर | सहयोग : फल बगीचा

चलती राहगीरों के पैरों में ब्रेक अपने आप ही लग जाते हैं जब घने रेतीले क्षेत्र में रोड़ के किनारे तारबंदी मे फलों के पौधे दिखाई देते हैं। बैंगटी कलां गाँव रेगिस्तान के उस अंचल में बसा है जहाँ दूर–दूर तक कोई हरीयाली दिखाई नहीं देती और ऐसी जगह एक साथ इतने फलों के पौधे को देख हर राहगीर को विस्मित करते हैं। इस फलों के बीच में ध्यान देते हैं तो एक बूढ़ी कृषकाय दिखाई देती है और यह कृषकाय सुमेर खाँ की है।

सुमेर खाँ ने बताया कि उसका इकलौता बेटा और बहू शहर की एक फैक्ट्री में काम करते हैं। उसकी जीवनसंगिनी कुछ वर्ष पहले अल्लाह को प्यारी हो चुकी है। एकाकीपन उन्हें जीवन में निराशा की ओर ले जा रहा था। जिन्दगी के प्रति सुमेर का रवैया बेदिली का था, क्योंकि उनके लिये पूरा दिन व्यतित करना पहाड़ के समान होता था। बेकार आदमी की तरह गाँव वालों ने सुमेर को भी टालना शुरू कर दिया, क्योंकि उससे बात करने का मतलब था समय की बर्बादी।

वोपा (VOPA) के निर्णयों ने न सिर्फ उसके एकाकीपन को दूर किया अपितु फलोद्यान देकर उसके जीवन में भी हरीयाली लाने का प्रयास किया। वोपा के लोगों ने सुमेर खान को यह जिम्मेदारी संभालने के लिए प्रोत्साहित किया। सुमेर खान कहते हैं कि मैं वोपा की बैठकों में सिर्फ इसलिये नहीं जाता हूँ कि मुझे कोई लाभ पहुँचेगा बल्कि वहाँ बैठकर मुझे ऐसा लगता है कि हम लोग अभी भी गाँव के विकास में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। शुरुआत में सुमेर खान को बोरड़ी के 4, गूंदा के 6, अनार के 4 और नींबू के 2 पौधे दिये गये। इन पौधों को हर हफ्ते प्रति पौधा 15 लीटर पानी देकर सींचा जाता है। सुमेर खान को पौधों की देखभाल के लिए प्रशिक्षण भी दिया गया है ताकि पौधे स्वस्थ रह सकें। सुमेर को धीरे–धीरे अपने काम में मजा आने लगा। उसने

रोजना 2–3 घण्टे अपनी बगिया की देखभाल में लगाना शुरू कर दिया। उसकी मेहनत रंग लायी। उसकी बगिया के 16 में से 13 पौधे दो फीट बड़े हो गये। सुमेर खान के बारे में अब गाँव वालों की राय पूरी तरह बदल चुकी है। वे सुमेर की क्षमताओं को पहचान चुके हैं। लोगों से बातचीत में सुमेर के प्रति उनका बदला हुआ रवैया साफ दिखता है।

सिणगारी देवी

उम्र : 62 साल — परिवार : 4 सदस्य

गाँव : कोलू पाबूजी, खण्ड–बाप, जिला–जोधपुर — सहयोग : फल बगीचा

कोलू पाबू जी गाँव की 62 वर्षीय सिंगारी देवी महिला सशक्तीकरण की अनूठी मिसाल है। भरी जवानी में विधवा हुई सिंगारी देवी का एक बेटा है, जो काम की तलाश में गाँव छोड़ गया है। अकेली सिंगारी देवी ही घर में एकांतवास काट रही है। बेटे के गाँव छोड़कर जाने के बाद शुरू में तो सबकुछ ठीक ही चल रहा था। लेकिन कुछ समय बाद अकेलापन सिंगारी को काटने लगा। वह घोर निराशा में डूब गई और जीवन जीने का उसे कोई उम्मीद ही नहीं दिखती थी। वह पूरी तरह हताश और निराश थी। उधर बेटे की आमदनी बहुत कम थी और खुद सिंगारी अपनी जर्जर काया से मेहनत–मजदूरी के काम नहीं कर सकती थी।

आज, सिंगारी देवी बहुत खुश है, क्योंकि उसके पास करने के लिये कुछ उपयोगी काम है। उसने प्रदान किये गये 20 के 20 पौधे बहुत व्यवस्थित तरीके से लगाये हैं। अपना ज्यादातर वक्त वह अपनी फलों की बगिया की देखभाल में गुजारती है। पौधे बड़े हो रहे हैं और उनकी लम्बाई दो फीट से आगे बढ़ रही है। 20 में 16 जिंदा बचे पौधे सिंगारी के 16 श्रृंगार बन गये हैं।

सिंगारी कहती है कि जब इन पौधों से फल आयेंगे तो वह रोज फल खायेगी और आस–पड़ौस के बच्चों को भी फल तोड़ने–खाने की पूरी छूट देगी। उसे लगता है कि इस तरह वह गाँव में प्रतिष्ठित हो जायेगी। सबसे ज्यादा भरोसा तो सिंगारी को इस बात का है कि अपने बाग के फल बेचकर वह अपनी माली हालत भी सुधार सकेगी।

बदल गये जिन्दगी के मानी

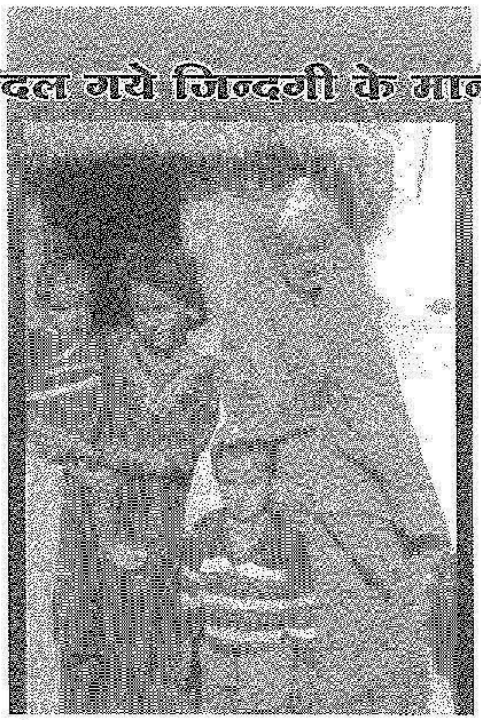

सफीयत

उम्र : 90 साल
परिवार : चार पुत्र (परन्तु अलग रहते हैं)
गाँव : भीमड़ा, खण्ड–शिव, जिला–बाड़मेर
सहयोग : गाय, एवं खड़ीन निर्माण

कक्षा 4 में पढ़ा था कभी 'बच्चे माँ–बाप के बुढ़ापे की लाठी होते हैं' लेकिन वास्तविकता के धरातल पर कितनी कोरी कल्पना है यह। आज के बच्चे लाठी से भी बद्तर हो गए हैं। एक लाठी निर्जीव और संवेदनहीन होते हुए भी सहारा तो देती है पर आज के युवा अपने माँ–बाप को सहारा देना तो दूर, उनके हाथ की लाठी भी छीन लेते हैं। ये संवेदनहीनता नहीं तो और क्या है?येन–केन प्रकारेण जो बड़ा घर बुजुर्गों द्वारा बच्चों के लिए बनाया जाता है, उसका एक कोना भी स्थायी रुप से उनके लिए खाली नहीं होता। जो हाथ बच्चों को पालते हुए नहीं थकते हैं, उन्हीं हाथों को आज दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती। उक्त तथ्य मुझे सफियत की स्थिति देखते हुए याद आई।

स्वयं को सूखे वृक्ष की उपमा देती हुई सफियत की आँखें नम हो जाती हैं। नम आँखों से सफियत कहती है कि भगवान, जीवन के अन्तिम मुकाम पर परिवार द्वारा उपेक्षित करने के बजाय मृत्यु दे तो ज्यादा बेहतर है। चार बेटों की माँ होने के उपरान्त भी कुछ दिन पहले तक सफियत अकेली अंधेरी कोठरी में पड़ी मृत्यु का इंतजार करती रहती थी। भूतकाल की चर्चा करते हुए

सफियत कहती है कि कई–कई दिन तो ऐसे गुजरते थे कि कोई से भी बेटे–बहू उसे रोटी देने तो दूर की बात, वे उससे बोलते भी नहीं थे। उसकी बूढ़ी आँखों में दुख के साये मंडराते हैं और वह कहती है जवान रूँख की सार–सम्भाल करते हैं लोग, क्योंकि वह फल देता है लेकिन जब रूँख बूढ़ा हो जाये तो कोई उसकी चिंता नहीं करता। ग्रामीण वृद्धजन संगठन का सफियत को गाय एवं खडीन के लिये लाभान्वित करने के लिये चयन करना ग्रामीण वृद्धजनों के पुनर्वास का एक अनुपम उदाहरण है।

सफियत की गाय रोजाना दो वक्त दुहने पर 4–6 किलो दूध देती है, जो सफियत के लिए बहुत ज्यादा है। सफियत ने बताया कि जैसे ही बेटों को पता लगा कि सफियत का चयन वृद्ध कमेटी ने गाय वितरण एवं खडीन निर्माण के लिये किया गया है तो चारों बेटे उसे अपने–अपने साथ रखने की चर्चा करने लगे। तब मुझे लगा इस दुनिया में "भैया बड़ा ना भैया, सबसे बड़ा रूपया"। सफियत का चयन किये जाने से न सिर्फ सफियत की सेहत ही सुधरी बल्कि इससे उसकी माली हालत पर भी प्रभाव पड़ा।

खडीन बनने का लाभ न सिर्फ पारिवारिक स्तर ही सफियत को हो बल्कि इसने गाँववालों को भी लाभान्वित किया। खडीन बनने से गाँव के बहुत से लोगों को कई दिन तक रोजगार मिला साथ ही सफियत की गाय से लोगों को छाछ–दही भी मिलने लगा। जिससे सफियत की पहचान गाँव में और भी बढ़ गई है।

सफियत ने बताया कि चारों बेटों में दूध की आपूर्ति सफियत की गाय ही कर रही है। दूध, घी, दही जहाँ पोते–पोतियों को मिलना नसीब नहीं होता था वहीं अब उन्हें सफियत की बदौलत मिल रहा है। आज सफियत को चारों बेटे महत्व देने लगे हैं।

न सिर्फ खाने–पीने की वजह से बल्कि परिवार के स्नेह से सफियत के चेहने पर खोई चमक पुनः झलकने लगी है। विश्वास नहीं होता यह वही सफियत है जो कुछ दिनों पूर्व सिर्फ मृत्यु का इंतजार करती थी, आज वह भगवान से जिन्दा रहने की कामना करती है।

आँखों में वापस लौटी चमक

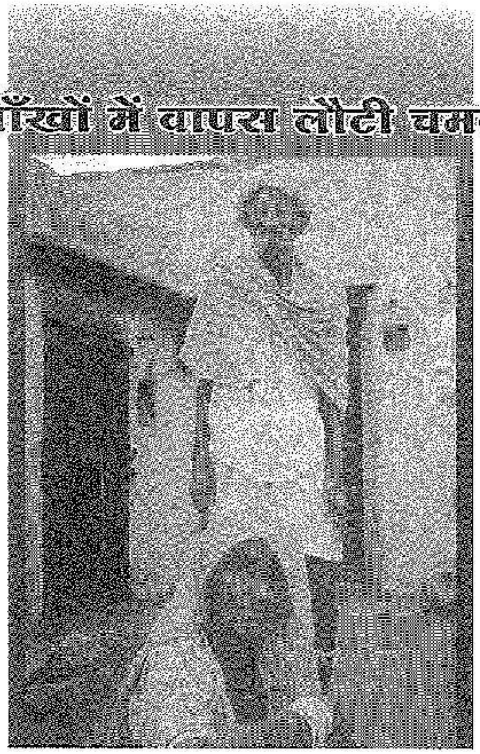

गंगा देवी कुम्हार

उम्र : 60 साल | परिवार : निःसन्तान दम्पति

गाँव : कोलूपाबूजी, खण्ड–बाप, जिला–जोधपुर | सहयोग : दुधारू गाय

उस सुरमई साँझ जब हम लोग गंगा देवी से मिलने उनके गाँव पहुँचे तो पति बुल्लाराम कुम्हार (उम्र 73 वर्ष) गाय को चारा खिला रहे थे और वह खुद दूध दुहने में व्यस्त थी। ग्राविस के साथी रोशन लाल ने कहा कि आज मैं इस निःसंतान दम्पति से आपको मिलवाकर बहुत खुश महसूस कर रहा हूँ। एक समय था जब ये लोग किसी के आने पर दरवाजा खोलने मात्र से डर जाते थे। आज ये अपने गाय–बछड़े के साथ व्यस्त हैं और इनके अकेलेपन और उदासी के दिन अब खत्म हो चुके हैं।

हम लोग खाट पर बैठे तो गंगा देवी हमारे लिये छाछ लेकर आई। पति बुल्लाराम ने आकर गर्वपूर्वक कहा, 'आप ही नहीं अब तो सारा गाँव ही यहाँ छाछ पीने आता है।'

साठ बसंत देख चुकी गंगा देवी और बुल्लाराम कुम्हार की इस कहानी का सबसे बड़ा दुःख है निःसन्तान होना। गंगा देवी ने कहा 'इनके तीन भाई हैं जो हमें छोड़ गये हैं। अब से पहले हम बिल्कुल अकेले थे।' इस निर्धन दम्पति के पास कहने को दस बीघा जमीन है लेकिन लगातार पड़ते अकाल और उसमें खेती करने की साधनहीनता के कारण वह जमीन बेकार है। इनकी आमदनी का एक मात्र जरिया है वृद्धावस्था पेंशन, जो महज रुपये 200/– प्रति माह है। किसी

किस्म के रोजगार की तलाश के लिये इनकी उम्र गवारा नहीं करती। भयानक गरीबी के कारण इनके भोजन का स्तर और स्वास्थ्य पहले बहुत खराब था। गाँव वालों ने भी इस निसन्तान दम्पति को अकेले छोड़ दिया, क्योंकि उनको डर था कि कहीं इनसे मिलने–जुलने के कारण इनकी जिम्मेदारी गले न आ पड़े।

मई, 2004 में इन्हें एक स्वस्थ गाय और बछडा दिया गया। गाय–बछड़े की देखभाल के साथ यह सोचा गया था कि ये लोग इस जिम्मेदारी को निभाते हुए कई प्रकार से लाभान्वित होंगे। गंगा देवी ने खुलासा करते हुए बताया, 'गाय रोजाना 5–6 किलो दूध देती है जो हमारी जरुरत (2 लीटर) से ज्यादा होता है। हमारे गाँव में ना तो कोई दूध बेचता है और न ही खरीदता है। बचे हुए दूध का दही बनाकर हम उससे घी निकाल लेते हैं और आने–जाने वालों को छाछ पिला देते हैं।' इससे उनके सामाजिक व्यवहार और स्थिति दोनों का स्तर और दायरा बढ़ गया है। महीने भर में 5–6 किलो घी तैयार होता है जो रूपये 200/– किलो के भाव से बिक जाता है। घी बेचने से हुई आमदनी ने उनकी आय को न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अनुकूल बना दिया है। आज उनकी नियमित मासिक आय लगभग रूपये 1000/– हो गई है जो पहले शून्य थी। गाय का गोबर खाद और ईंधन के काम आ जाता है। इससे जलावन के लिये लकड़ी लाने की उनकी समस्या भी हल हो गई है।

पति–पत्नी एक दूसरे से ठिठोली करते हैं, बुल्लाराम ने कहा 'पहले तो तुम पेट दर्द की शिकायत करती थी, अब कहां गया तुम्हारा पेट दर्द?, गंगा देवी का दो टूक जवाब था, 'तुमने कहाँ मदद की? तुम तो खुद ठीक से चल भी नहीं सकते थे। यह तो मैं हूँ जिसने तुम्हें दूध, दही, घी, छाछ देकर चलने–फिरने के लायक बनाया।'

अब्दुल्ला

उम्र : 62 साल | परिवार : 10 सदस्य

गाँव : भीमड़ा, खण्ड–शिव, जिला–बाड़मेर | सहयोग : खड़ीन निर्माण

बाग को जन्म देने वाला बागवान और परिवार को जन्म देने वाले माता–पिता अपने खून–पसीने से अपने पौधों को सींचते हैं। वे न सिर्फ अपने पेड़ से बल्कि उसके साए से भी प्यार करते हैं। इसी उम्मीद के साथ कि जब एक दिन वे जिन्दगी से थक जाएंगे, तब यही छाया उसके काम आएगी। परन्तु माता–पिता का यह सपना मात्र छलावा बनकर रह गया है। आज का बालक उनके उन संस्कारों, माता–पिता के प्रेम को भूल कर स्वयं और अपने बच्चों तक सीमित हो जाता है, खैर..........। अब्दुल्ला की उक्त बात ने मुझे भी आन्तरिक तौर पर अधीर कर दिया। 62 साल का अब्दुल्ला अपने चार बेटों और बीवी के साथ गाँव भीमड़ा में रहता है। उसके बड़े बेटे ने पिता को बोझ समझकर छोड़ दिया। दूसरा बेटा जोधपुर में रहकर मजदूरी करता है। उसके तीन बेटे और एक बेटी बहुत छोटे हैं। कमाऊ बेटों में से कोई भी अब्दुल्ला की मदद नहीं करता।

अब्दुल्ला ने बताया कि उसके पास थोड़ी–सी जमीन है जो पानी की कमी के कारण बेकार पड़ी थी। जमीन ढलवाँ होने के कारण बारिश का पानी बीज–मिट्टी सबको बहाकर साथ ले जाता था। उसकी सारी मेहनत पानी में बह जाती थी। लगातार पड़ते अकाल ने उसकी जिन्दगी को लगभग दोजख बना दिया था। अब्दुल्ला ने बताया "ग्राविस के सहयोग से मेरे खेत में 1200 फीट लम्बी और 4–5 फीट ऊँची पक्की–मजबूत खड़ीन का निर्माण हुआ। जलग्रहण क्षेत्र में पेड़–पौधे लगाकर और निचले हिस्से में पुश्ता बनाकर खड़ीन को अधिक उपयोगी बनाया गया।"

'मैंने अपने खेत पर खडीन बनाई और मेरे परिवार ने इसमें बहुत मेहनत की है।' यह कहते हुए अब्दुल्ला की आँखे गर्व से चमक उठी। उसकी मेहनत रंग लायी है। उसके खेत पर बनी खडीन उसकी फसल को पर्याप्त नमी देकर खुशियों की बालियाँ सौगात में बाँट रही है।

इस बरस, जब पडौसियों के खेत अकाल की मार से सूखे–प्यासे तरस रहे थे, अब्दुल्ला के खेत में अच्छी पैदावार हुई। उसके छोटे से खेत में तीन क्विंटल बाजरा, आधा क्विंटल तिल, डेढ़ क्विंटल ग्वार और तीन क्विंटल मतीरा (तजबूज) की पैदावार ने सबको चौंका दिया। उसने अपनी फसल में से कुछ भी नहीं बेचा, सब कुछ भविष्य के मुश्किल दिनों के लिए बचाकर रख लिया। आज अब्दुल्ला के पास परिवार का पेट पालने के लिए भरपूर अनाज और अन्य खाद्य सामग्री है।

अब्दुल्ला के खेत की देखा–देखी गाँव के अनेक किसानों ने अपने खेतों पर अपने ही पैसों से खडीन बनाना शुरू कर दिया है। गाँव वालों के लिए अब अब्दुल्ला खडीन निर्माण का अनुभवी विशेषज्ञ सिद्ध हो रहा है। गाँव वाले उसके पास सलाह–मशविरे के लिए आने लगे हैं।

सुधरती माली हालत ने अब्दुल्ला को परिवार तथा समाज में और प्रतिष्ठित कर दिया है। उसके पड़ौसी उसके पास बैठकर खडीन निर्माण के फायदों की बातें कर लाभान्वित हो रहे हैं। आज अब्दुल्ला समाज के लिए खुद को ज्यादा उपयोगी और महत्वपूर्ण समझने लगा है। सही कहा है किसी ने, 'अल्लाह उनकी मदद करता है जो खुद की मदद करते हैं।'

खुशी के आँसू

मुरादा

उम्र : 85 साल
गाँव : बैंगटी कलां, खण्ड–फलौदी, जिला–जोधपुर

परिवार : 7 सदस्य
सहयोग : टांका निर्माण

अपनी त्रासदी कहते हुए मुरादा की रुलाई फूट पड़ती है और अपनी बूढ़ी आँखों में आँसू लिये वह कहती है, '**जिन्दगी तो उगते हुए सूरज की तरह है जिसे सब सलाम करते हैं, ढलते हुए सूरज को कौन ढोकता है।**' कैसे कहूँ, बहुत कड़े दिन थे वो, जब मेरा अपना बेटा ही मुझसे अच्छा सलूक नहीं करता था, क्योंकि मैं परिवार के लिये किसी काम की नहीं थी।' मुरादा मानसिक तनाव से ग्रस्त, निराशा और चिड़चिड़ेपन की शिकार हो गई थी, जब अपने बेटे से ही उसे सही व्यवहार नहीं मिला।

बेटा, बहू और चार पोते–पोतियों वाली मुरादा विधवा है। बेटा एक खान में अकुशल मजदूर के रूप में काम करता है। जैसे–जैसे परिवार बढ़ा, उसकी अकेले की मजदूरी से परिवार का पेट पालना मुश्किल होता गया। इसलिये उसकी पत्नी ने भी उसके साथ मजदूरी पर जाना शुरु कर दिया। अपनी बूढ़ी काया की मजबूरियों के बावजूद मुरादा ने अपने पोते–पोतियों की देखभाल की। मुरादा के लिये सबसे मुश्किल काम था 1.5 किमी. दूर जाकर पानी लाना। चार बच्चों की जिम्मेदारी और गरीबी के कारण बेटे ने माँ के साथ वह सलूक किया जो एक मजबूर बेटा ही कर सकता है। मुरादा परिवार में एक बेकार–फालतू सदस्य थी जो बोझ से अधिक कुछ नहीं थी।

मार्च, 2004 में बरसाती पानी इकट्ठा करने के लिए मुरादा के घर में दस फीट गहरा एवं 10 फीट चौड़ा एक टांका बनाया गया। टाँके का मुँह बाल्टी से पानी निकालने के लिये पर्याप्त बड़ा है और कचरा आदि इसमें न जा सके इसके लिये उस पर एक मजबूत ढक्कन भी लगाया गया है। तकनीकी रुप से टांका इस तरह बनाया गया है कि घर और आसपास का सारा बरसाती पानी टाँके में आता है। पानी के साथ मिट्टी टाँके में नहीं जा सके इसके लिए एक मिट्टी रोधक (सिल्ट केचर) ढ़ाँचा भी बनाया गया है। एक बरस के सूखे और अकाल के बावजूद मुरादा पहले से कहीं बेहतर हालात में है, क्योंकि टाँके में पिछली बरसातों का जमा पानी आज भी उसे अपने अक्स में झाँक कर मुस्कुराने के लिये मजबूर करता है।

आज मुरादा को अपनी बूढ़ी काया को आराम देने के लिये कुछ और वक्त मिल गया है। अपने पोते–पोतियों की देखभाल उसके लिए और आसान हो गई है। साफ–स्वच्छ पानी परिवार के लिए सहज सुलभ हो गया है और बेटा–बहू भी अब अपने बच्चों की देखभाल को लेकर चिंतित नहीं रहते। परिवार के लिये मुरादा अब जिम्मेदारी नहीं सम्पति है, क्योंकि उसने परिवार की जरूरतों के लिये टाँके के रुप में खुशियों का खजाना खोल दिया है। बेटा–बहू घर की सबसे बड़ी बुजुर्ग सदस्य होने के कारण आज मुरादा को यथोचित सम्मान भी देते हैं।

मुरादा की आँखों में आज भी आँसू है लेकिन ये आँसू खुशी के हैं।

मण्डालिया की नाड़ी

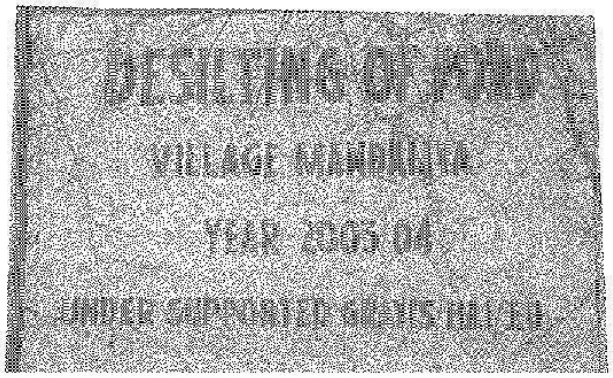

बाड़मेर जिले के शिव खण्ड में मण्डालिया गाँव की नाड़ी का पानी बहुत मीठा है। कोई सौ बरस पहले पालीवाल समुदाय के लोगों ने इस नाड़ी का निर्माण किया था। वर्षाजल के संग्रहण से बनी इस नाड़ी से गाँव भर की आबादी और पशुओं को पानी मिलता था। नाड़ी का जलग्रहण क्षेत्र लगभग 10–15 हैक्टर है। नाड़ी 300X200 फीट आकार की और 2 फीट गहरी है। अज्ञानता और खराब प्रबंध व्यवस्था के चलते नाड़ी की जल संग्रहण क्षमता घटती गई और इसमें मिट्टी जमा होने लगी। कम पानी और बढ़ती आबादी की जरूरतों के लिहाज से नाकाफी इस नाड़ी को लोग लगभग भुला बैठे थे।

निरन्तर पड़ते अकाल ने गाँव की जिन्दगी को पूरी तरह से तबाह कर दिया था। पानी के बढ़ते संकट से खेती चौपट थी और खाद्य संकट गहराता जा रहा था। लोग हर मोर्चे पर जिन्दगी के लिए जूझ रहे थे। औरतों को लम्बी दूरियाँ तय कर पानी लाना पड़ता था। ग्रामीण वृद्धजन

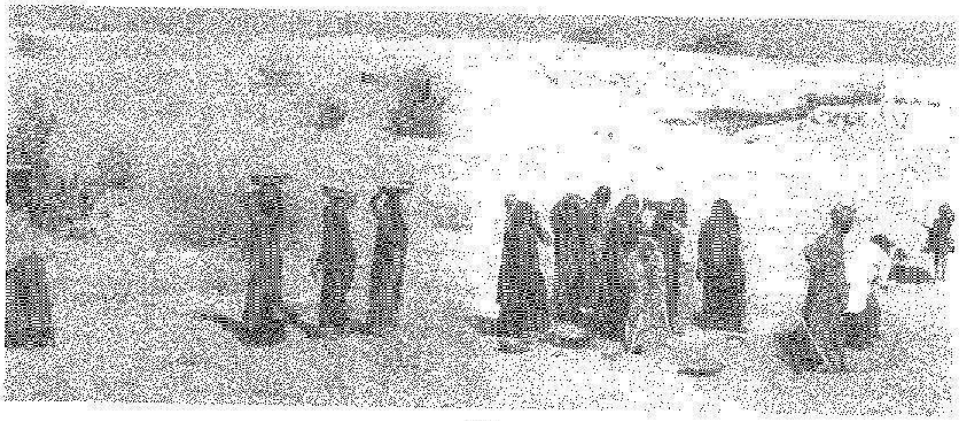

संगठन की एक बैठक में पुराने जमाने की जल प्रबंधन व्यवस्थाओं पर बातचीत रखी गई। मण्डालिया गाँव के सारे वृद्ध लोग अपनी नाडी के बारे में बातें कर रहे थे। लेकिन पिछले तीन सालों से वह लगभग सूखी पड़ी थी। इस बहस–मुबाहिसे में यह प्रश्न उठा कि अगर नाड़ी पहले गाँव का एकमात्र जलस्रोत थी तो आज वह जलापूर्ति का श्रोत क्यों नहीं बन सकती। इसी से नाड़ी के जीर्णोद्धार का विचार जन्मा और इसके प्रयास शुरु हुए।

वर्ष 2003 में ग्रामीण वृद्धजन संगठन के सदस्यों के अनुरोध पर ग्राविस ने नाड़ी में भरी मिट्टी को निकालकर इसकी जल संग्रहण क्षमता और गहराई बढ़ाने का काम हाथ में लिया। इस काम के लिए 80 लोगों को 60 दिन तक मिट्टी हटाने में लगाया गया। इसका प्रत्यक्ष फायदा पीड़ित ग्रामीणों को थोड़ी–बहुत मजदूरी के रूप में मिला।

वर्ष 2004 में सिर्फ दो बरसातों में ही नाड़ी में 3 फीट गहरा पानी आ गया था। आज गाँव वालों के लिए घरेलू उपयोग का पानी पर्याप्त मात्रा में मौजूद है। लोग इस पानी का उपयोग पशुओं के लिए भी करते हैं। जिन लोगों के घर में टाँके बने हुए हैं वे नाड़ी का पानी टैंकरों में भरकर ले जाते हैं और जरुरत के मुताबिक टांके में संग्रहीत पानी से अपना घर चलाते हैं। 2004 में बारिश औसत से भी कम हुई थी। लेकिन गाँव वाले जानते हैं कि एक अच्छी बारिश मण्डालिया की नाड़ी को लबालब भर देगी। जैसा कि जमना देवी कहती है, 'एक बिरखा होण द्यो, मैं तो नाड़ी सूँ ही भरस्यूं पाणी। इण नाड़ी रो पाणी खारो कोनी, मीठो छै।'

अन्य प्रकाशन

Books & Booklets

- **Traditional Agricultural and Water Harvesting Technologies of Thar Desert**

  Dr. Bharat Jhunjhunwala

- **Flurosis in Rajasthan**

  Deepak Malik, Ram Babu, Vinay Chabra

- **Drinking Water Crisis in Rural Rajasthan**

  Sudhir Katiyar, Deepak Malik

- **Role of Women in Agriculture**

  Mini Thakur

- **Harvesting the Rains in Thar**

  Pramod Kulkarni

- **Tales of Woe**

  Deepak Malik, Vinita Agarwal, Beth Rabinowitz, Mahitosh Bagoria

- **Crippling Human life**

  Deepak Malik, Shobha Kavoori, Mahitosh Bagoria

- **A Profile of Sand Stone Mineworkers of Jodhpur and Dust Born Diseases**

  Dr. S.M. Mohnot, Harsh Jaitly

- **A Report on the Round Table Conference on Mineworkers**

  Dr. S.M. Mohnot, L.C. Tyagi, Ben Falk

- **Not Letting a Drop Go Waste**

  Dr. Sudhirendar Sharma, Dr. Bharat Jhunjhunwala

- **Taking on the Challenges**
  Deepak Malik, Mahitosh Bagoria
- **Rain Fed Agriculture in Thar**
  Sudhir Katiyar, L.C. Tyagi, Narendra Singh
- **Story of Thar Desert Degradation and Revival-an NGO Effort**
  L.C. Tyagi
- मलेरिया
  ग्राविस टीम
- राजस्थान में घटता जल एवं बढ़ता फ्लोरोसिस
  दीपक मलिक, राम बाबू, विनय छाबड़ा, सुधीर कटियार
- आहत में राहत
  दीपक मलिक, महितोष बागोरिया
- **Smiles on Their Faces**
  J.P. Gupta, Deepak Malik, Mahitosh Bagoria
- **Tears of Dust**
  Deepak Malik, Mahitosh Bagoria, Pragya Mathur Kumar
- **Community Health in Thar Desert**
  Evelyn Harvey
- **Drought Proofing of People in Thar**
  J.P. Gupta, Deepak Malik, Mahitosh Bagoria

सामयिक पत्र–पत्रिकाएँ

- खान मजदूर
- सोच पानी की
- बिन पानी सब सून
- प्रतिबिम्ब
- **Mine Worker**
- **Water Wheels**

प्रशिक्षण मार्गदर्शिकाएँ

- खड़ीन
- टांका एवं नाड़ी
- उठ जाग मजदूर
- नई दिशा
- कहानी स्वच्छ पानी की महिमा
- बच्चों की दस बीमारियाँ
- मातृ एवं शिशु सुरक्षा
- उन्नत कृषि मार्गदर्शिका
- वृद्ध स्वास्थ्य रोग निदान
- परम्परागत पेयजल स्रोत
- वृद्ध कल्याण योजनाएँ
- पशु स्वास्थ्य
- पशु पालन
- एड्स
- आओ समझें एड्स को